Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 3, No. 2, November – December 2025

बांग्ला भाषा की विकास-धारा: प्राकृत–अपभ्रंश से आधुनिक काल तक

डॉ. परिमल मण्डल, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग, स्वर्णमयी जोगेन्द्रनाथ महाविद्यालय, आमदावाद, नन्दीग्राम, पूर्व मेदिनीपुर, पश्चिमबङ्गाल

ईमेल: parimalbhu@gmail.com

सारसंक्षेप

बांग्ला भाषा इन्दो-आर्य भाषा-परिवार की एक महत्वपूर्ण भाषा है, जिसका विकास एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक चरणों से होकर बांग्ला भाषा ने अपने भाषिक स्वरूप, शब्दभण्डार तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति में निरन्तर परिवर्तन और परिपक्वता प्राप्त की है। संस्कृतजन्य, देशज तथा विदेशी तत्वों के समन्वय ने बांग्ला भाषा को एक समृद्ध और जीवन्त भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इस शोधपत्र में बांग्ला भाषा की विकास-धारा का प्राकृत और अपभ्रंश चरण से लेकर आधुनिक काल तक ऐतिहासिक एवं भाषातात्त्विक दृष्टिकोण से संक्षेप में विश्लेषण किया गया है।

कुञ्चिकाशब्द-

बांग्ला भाषा, भाषिक विवर्तन, प्राकृत, अपभ्रंश, मगधी प्राकृत, प्राचीन बांग्ला, मध्य बांग्ला, आधुनिक बांग्ला, भाषातत्त्व, शब्दभाण्डार

भूमिका

इन्दो-यूरोपीय भाषा परिवार विश्व का सर्वाधिक व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण भाषा परिवार माना जाता है, जिसकी भाषाएँ यूरोप के पश्चिमी भूभाग से लेकर एशिया के पूर्वी क्षेत्रों तक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र में प्रचलित हैं। इस भाषा परिवार से विकसित अनेक आधुनिक भाषाएँ आज विभिन्न देशों की भाषिक एवं सांस्कृतिक पहचान का आधार बनी हुई हैं। बांग्ला भाषा भी इसी प्राचीन एवं समृद्ध इन्दो-यूरोपीय भाषा परिवार की एक प्रमुख आधुनिक भारतीय आर्य भाषा है। बांग्ला भाषा की वंशावली पर विचार करते हुए भाषाविदों का यह मत उल्लेखनीय है कि यद्यपि बांग्ला भाषा ने अपेक्षाकृत उत्तरकालीन सहस्राब्द में एक स्वतन्त्र भाषिक स्वरूप प्राप्त किया, तथापि वंशगत दृष्टि से यह एक दीर्घ एवं सुदृढ़ भाषिक परम्परा की उत्तराधिकारी है। इस सन्दर्भ में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि बांग्ला भाषा का उद्भव सीधे इन्दो-यूरोपीय भाषा से नहीं हुआ, बल्कि इसके विकास के मध्य अनेक ऐतिहासिक,

भाषातात्त्विक एवं संरचनात्मक चरण विद्यमान रहे हैं। इन चरणों से होकर गुजरते हुए ही बांग्ला भाषा ने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया।

भारतीय आर्य भाषाओं का क्रमिक विकास और बांग्ला भाषा की उत्पत्ति

भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास को सामान्यतः तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है—प्राचीन भारतीय आर्यभाषा, मध्य भारतीय आर्यभाषा तथा नव्य भारतीय आर्यभाषा। बांग्ला भाषा का विकास इसी क्रमिक भाषिक परम्परा के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ है, जिसमें प्रत्येक चरण ने उसके संरचनात्मक एवं शब्दात्मक स्वरूप के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

१. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का समयकाल सामान्यतः 1500 ई.पू. से 500 ईस्वी तक माना जाता है। इस चरण की प्रमुख भाषा वैदिक संस्कृत है, जिसके प्रमुख साहित्यिक प्रमाण ऋग्वेदसंहिता, यजुर्वेदसंहिता, सामवेद तथा अथर्ववेदसंहिता में उपलब्ध हैं। इस युग की भाषा अत्यन्त समृद्ध, व्याकरण-संयमित चिन्तन की सशक्त वाहक रही है। आगे चलकर इसी संस्कृत भाषा के विकसित और सरलीकृत रूपों से मध्य भारतीय आर्यभाषाओं का विकास हुआ, जिसने आधुनिक भारतीय भाषाओं की आधारभूमि निर्मित की।

२. मध्य भारतीय आर्यभाषा

मध्य भारतीय आर्यभाषा का काल लगभग 600 ईसा-पूर्व से 900 ईस्वी तक विस्तृत माना जाता है। इस चरण में पाली, विभिन्न प्राकृत भाषाओं तथा अपभ्रंश का विकास हुआ। अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त प्राकृत, संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत संवाद, जैन आगमों की प्राकृत रचनाएँ तथा बौद्ध ग्रंथों में प्रयुक्त पाली इस युग की भाषिक स्थिति के प्रमुख उदाहरण हैं। इस चरण में भाषा का स्वरूप अपेक्षाकृत सरल, लोकाभिमुख एवं व्यावहारिक हो गया, जिससे वह जनसामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में घटित ध्वनिगत, रूपात्मक एवं शब्दात्मक परिवर्तनों ने आगे चलकर नव्य भारतीय आर्यभाषाओं के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार की।

३. नव्य भारतीय आर्यभाषा

नव्य अथवा आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का काल लगभग 900 ईस्वी से वर्तमान समय तक विस्तृत है। इसी चरण में बांग्ला, हिन्दी, मराठी, पञ्जाबी, अवधी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं का क्रमिक विकास हुआ। इस युग में भाषाओं ने स्वतंत्र व्याकरणिक संरचना, समृद्ध शब्दावली तथा विकसित साहित्यिक परम्परा प्राप्त की, जिससे वे पूर्णतः स्वायत्त भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित हुईं।

४. बांग्ला भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी मत

बांग्ला भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भाषाविद् सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय ने एक सुव्यवस्थित विकासक्रम प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार प्राचीन भारतीय आर्यभाषा से मध्य भारतीय आर्यभाषा के मगधी प्राकृत का विकास हुआ, मगधी प्राकृत से मगधी अपभ्रंश, मगधी अपभ्रंश से अबहट्ठ तथा अंततः अबहट्ठ से बांग्ला भाषा का उद्भव हुआ[i]। किन्तु मगधी अपभ्रंश एवं अबहट्ठ के पर्याप्त लिखित प्रमाण उपलब्ध न होने के कारण इस मत पर कुछ विद्वानों ने आपत्ति भी प्रकट की है। भाषाविज्ञानी परेशचन्द्र मजूमदार का मत है कि बांग्ला भाषा की उत्पत्ति मगधी अपभ्रंश से न होकर तथाकथित 'आदर्श कथ्य प्राकृत' से हुई है। परन्तु आदर्श कथ्य प्राकृत से बांग्ला भाषा की उत्पत्ति के समर्थन में भी कोई ठोस ऐतिहासिक या लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसी कारण जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय आदि भाषावैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित मगधी अपभ्रंश–अबहट्ठ से बांग्ला भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त अपेक्षाकृत अधिक तर्कसङ्गत, व्यापक रूप से स्वीकृत एवं प्रचलित माना जाता है[ii]।

बांग्ला भाषा का ऐतिहासिक विकास: प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक चरण

बांग्ला भाषा का जन्म सामान्यतः लगभग 900 से 1000 ईस्वी के मध्य माना जाता है। इस काल से लेकर वर्तमान समय तक बांग्ला भाषा के विकास एवं रूपान्तरण की प्रक्रिया एक सहस्र वर्ष से अधिक अवधि में विस्तृत रही है। इस दीर्घ ऐतिहासिक विकासक्रम को भाषावैज्ञानिक दृष्टि से तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है—प्राचीन बांग्ला, मध्य बांग्ला तथा आधुनिक बांग्ला।

१. प्राचीन बांग्ला

प्राचीन बांग्ला भाषा का समयकाल लगभग 900 ईस्वी से 1350 ईस्वी तक माना जाता है।[iii] अधिकांश विद्वानों के अनुसार प्राचीन बांग्ला के आद्य साहित्यिक निदर्शन बौद्ध सहजियों द्वारा रचित *चर्यागीति* अथवा *चर्यापद* हैं। इन ग्रन्थों की खोज महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने नेपाल के राजदरबार के पुस्तकालय से की थी। इसके अतिरिक्त अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत *अभिधानकल्पद्रुम* में प्राप्त कुछ बांग्ला शब्द तथा बौद्ध कवि धर्मदास के ग्रन्थों में उपलब्ध कुछ कविताओं को भी प्राचीन बांग्ला भाषा के प्रारम्भिक निदर्शन के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस चरण की भाषा में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ध्वनिगत और रूपात्मक तत्व स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं, जो इसके संक्रमणकालीन स्वरूप को सूचित करते हैं।

२. मध्य बांग्ला

मध्य बांग्ला भाषा का काल लगभग 1350 ईस्वी से 1760 ईस्वी तक विस्तृत माना जाता है[iv]। इस चरण को सामान्यतः दो उपभागों में विभाजित किया जाता है—आदि-मध्य बांग्ला तथा अन्त्य-मध्य बांग्ला।

(क) आदि-मध्य बांग्ला

आदि-मध्य बांग्ला का समयकाल लगभग 1350 ईस्वी से 1500 ईस्वी तक, अर्थात् लगभग 150 वर्षों तक माना जाता है[v]। साहित्यिक प्रमाणों की तुलनात्मक न्यूनता के कारण इस काल को कुछ विद्वानों द्वारा बांग्ला भाषा के इतिहास में 'अन्धकारमय युग' कहा गया है। तथापि यह उल्लेखनीय है कि इस अवधि में *श्रीकृष्णकीर्तन* काव्य जैसी महत्त्वपूर्ण रचना उपलब्ध है, जो इस काल की भाषिक और साहित्यिक संभावनाओं को पूर्णतः नकारने की अनुमति नहीं देती।

(ख) अन्त्य-मध्य बांग्ला

अन्त्य-मध्य बांग्ला का काल लगभग 1500 ईस्वी से 1760 ईस्वी तक, लगभग 250 वर्षों तक फैला हुआ है[vi]। इस चरण में बांग्ला भाषा और साहित्य का उल्लेखनीय विकास हुआ। वैष्णव पदावली, मङ्गलकाव्य-परंपरा, गीतिका काव्य तथा विविध अनुवाद साहित्य इस युग की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। इस काल में बांग्ला भाषा एक सुदृढ़ और परिपक्व साहित्यिक माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

३. आधुनिक बांग्ला

आधुनिक बांग्ला भाषा का प्रारम्भ सामान्यतः लगभग 1800 ईस्वी से माना जाता है और यह परम्परा वर्तमान समय तक निरन्तर प्रवाहित हो रही है[vii]। इस युग में पारम्परिक काव्यशैली के साथ आधुनिक चेतना का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक बांग्ला भाषा और साहित्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज के लेखकों तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा रचित बांग्ला पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके साथ ही राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बङ्किमचंद्र चट्टोपाध्याय, माइकल मधुसूदन दत्त तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महान साहित्यकारों के योगदान से बांग्ला भाषा आधुनिकता, प्राञ्जलता और वैश्विक प्रतिष्ठा प्राप्त करती है।

४. बांग्ला भाषा का भौगोलिक विस्तार एवं वर्तमान स्थिति

प्राचीन काल में बांग्ला भाषा का भौगोलिक विस्तार अविभाजित बंग प्रदेश तक सीमित था, जिसमें वर्तमान पश्चिम बंगाल एवं पूर्वी बंगाल अर्थात् वर्तमान बांग्लादेश के साथ-साथ बिहार के मिथिला क्षेत्र, संताल परगना, मानभूम, सिंहभूम तथा छोटानागपुर जैसे क्षेत्र सम्मिलित थे[viii]। कालान्तर में राजनीतिक परिवर्तनों, विदेशी आक्रमणों तथा सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव से बांग्ला भाषा का भौगोलिक स्वरूप क्रमशः परिवर्तित होता गया। वर्तमान समय में बांग्ला भाषा भारत के पश्चिम बंगाल, असम और त्रिपुरा राज्यों में तथा संपूर्ण बांग्लादेश में व्यापक रूप से बोली जाती है। इसके अतिरिक्त अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह, भारत के अन्य राज्यों, उत्तर अमेरिका, मध्य पूर्व, दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरोप तथा पाकिस्तान में भी बांग्ला भाषी समुदाय विद्यमान हैं। विश्व स्तर पर भाषाभाषियों की

संख्या के आधार पर बांग्ला भाषा का स्थान प्रमुख भाषाओं में सातवाँ माना जाता है। अनुमानतः वर्तमान समय में बांग्ला भाषा बोलने वालों की संख्या लगभग तीस करोड़ के आसपास मानी जाती है।

शब्दभाण्डार

किसी भी भाषा की सजीवता, विस्तार तथा अभिव्यक्ति-क्षमता का मूल आधार उसका शब्दभण्डार होता है। किसी भी भाषा की शब्दावली सामान्यतः तीन प्रकार से समृद्ध होती है—(1) उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त प्राचीन शब्दों से, (2) अन्य भाषाओं से ग्रहण किए गए शब्दों से तथा (3) नवनिर्मित शब्दों से। बांग्ला भाषा ने भी अपनी शब्दावली को इन्हीं तीन माध्यमों से समृद्ध किया है। भाषातात्त्विक दृष्टि से बांग्ला शब्दभण्डार को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है—**मूल शब्द**, **कृतऋण शब्द** तथा **नवनिर्मित शब्द**। मूल शब्द वे हैं जो प्राचीन भारतीय आर्यभाषा से सीधे अथवा परिवर्तन के माध्यम से उत्तराधिकार के रूप में बांग्ला भाषा में आए हैं। इन मूल शब्दों को पुनः तीन उपवर्गों में बाँटा गया है—**तत्सम**, **अर्धतत्सम** तथा **तद्भव**।

तत्सम शब्द

जो शब्द संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के सीधे बांग्ला भाषा में आए हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहा जाता है। 'तत्' का अर्थ है 'वह' और 'सम' का अर्थ है 'समान'; अर्थात् संस्कृत के समान रूप में प्रयुक्त शब्द तत्सम कहलाते हैं। बांग्ला भाषा में लगभग 44 प्रतिशत[ix] शब्द तत्सम माने जाते हैं, जो आज भी संस्कृत के मूल रूप में प्रयोग में आते हैं।
जैसे— *अङ्ग, अक्षि, अग्नि, अश्व, आकाश, आचार्य, ईश्वर, उत्तर, उदर, उदाहरण, औषध, कवि, कान्ति, कृषि, क्रोध, क्षति, गगन, गज, गीत, चरण, जीवन, तन्तु, तृण, दन्त, दान, धूम, नक्षत्र, पिता, पात्र, फल, विद्या, वीणा, भक्ति, माता, माला, रात्रि, शक्ति, शान्ति, श्रम, सागर, सूर्य, सिंह, हेतु, होम* आदि।

तत्सम शब्दों को भी दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है—**सिद्ध तत्सम** और **असिद्ध तत्सम**। जो शब्द व्याकरण-सिद्ध हैं तथा संस्कृत ग्रन्थों में उपलब्ध हैं, वे सिद्ध तत्सम कहलाते हैं, जैसे—*सूर्य, मित्र* आदि। इसके विपरीत जो शब्द व्याकरण-सिद्ध नहीं माने जाते, उन्हें असिद्ध तत्सम कहा जाता है, जैसे—*कृषाण, घर, चाल, डाल* आदि।

तद्भव शब्द

'तद्' का अर्थ है 'उससे' और 'भव' का अर्थ है 'उत्पन्न'। अतः जो शब्द संस्कृत से चलकर पालि-प्राकृत-अपभ्रंश के माध्यम से विकसित होकर बांग्ला भाषा में आए हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहा जाता है। बांग्ला भाषा में लगभग 51 प्रतिशत[x] शब्द तद्भव माने जाते हैं।

संस्कृत	**प्राकृत**	**तद्भव**
एकादशः	एग्गारह	एगारो
अद्यः	अज्ज	आज
उपाध्यायः	उवज्झाओ	ओझा
कर्णः	कनण	कान
चन्द्रः	चान्द	चाँद
वधू	वहू	वउ
खादति	खाअइ	खाय
कथयति	कहेइ	कहे
प्रविशति	पविसइ	पैशे

तद्भव शब्दों को भी दो वर्गों में विभाजित किया गया है—**निजी शब्द** और **कृतऋण तद्भव**। जो शब्द वैदिक अथवा संस्कृत के निजी शब्दों के रूपान्तर के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए हैं, वे निजी शब्द कहलाते हैं। जैसे— *इन्द्रागार* ⟶ *इन्दाआर* ⟶ *इन्दारा*। जो शब्द पहले वैदिक या संस्कृत में इन्दो-यूरोपीय भाषावंश की अन्य भाषाओं से कृतऋण के रूप में आए और बाद में प्राकृत के माध्यम से बांग्ला में रूपान्तरित हुए, उन्हें कृतऋण तद्भव कहा जाता है। उदाहरणार्थ— ग्रीक *द्राख्मे* ⟶ संस्कृत *द्रम्य* ⟶ बांग्ला *दाम*।

अर्धतत्सम शब्द

जो शब्द वैदिक संस्कृत से प्राकृत के माध्यम से न आकर सीधे बांग्ला भाषा में आंशिक परिवर्तन के साथ आए हैं, उन्हें अर्धतत्सम अथवा भग्नतत्सम कहा जाता है। जैसे— *कृष्ण* ⟶ *केष्ट, क्षुधा* ⟶ *खिदे, गृहिणी* ⟶ *गिन्नी, रात्रि* ⟶ *रात्तिर* आदि।

आगन्तुक शब्द

कृतऋण शब्दों के अन्तर्गत आगन्तुक शब्दों का विशेष महत्व है। जो शब्द संस्कृत के माध्यम से न आकर सीधे अन्य भाषाओं से बांग्ला भाषा में प्रविष्ट हुए हैं, उन्हें आगन्तुक शब्द कहा जाता है। जैसे— *लगातार, वातावरण, सलाम, दोस्त, मस्तान* आदि।

नवनिर्मित शब्द

विभिन्न वर्गों के शब्दों के साथ उपसर्ग, प्रत्यय अथवा पारस्परिक संयोग के द्वारा निर्मित नए शब्द नवनिर्मित शब्द कहलाते हैं। जैसे— *फूलदानि, मास्टरमशाय, जजसाहेब* आदि।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बांग्ला भाषा का विकास एक दीर्घ, क्रमिक एवं बहुपरतीय भाषिक प्रक्रिया का परिणाम है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा से प्रारम्भ होकर प्राकृत एवं अपभ्रंश के माध्यम से आधुनिक बांग्ला भाषा का निर्माण निरन्तर ध्वनिगत, रूपात्मक तथा शब्दभाण्डारगत रूपान्तरणों के द्वारा सम्पन्न हुआ है। विशेषतः मगधी प्राकृत और उससे विकसित अपभ्रंश ने बांग्ला भाषा के गठन में सेतु की भूमिका निभाई है। प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक—इन तीनों चरणों में बांग्ला भाषा ने अपने भाषिक स्वरूप और साहित्यिक अभिव्यक्ति में निरन्तर विकास प्रदर्शित किया है। समग्रतः बांग्ला भाषा का अध्ययन भारतीय आर्य भाषाओं की विकास-परम्परा को समझने की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है।

तथ्यसूत्र-

[i] बंगाली भाषा और संस्कृति, पश्चिम बंगाल उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद, पृष्ठ-129
[ii] सामान्य भाषाविज्ञान और बंगाली भाषा-डॉ. रामेश्वरम - पृष्ठ 595
[iii] सामान्य भाषाविज्ञान और बंगाली भाषा-डॉ. रामेश्वरम - पृष्ठ 597
[iv] सामान्य भाषाविज्ञान और बंगाली भाषा-डॉ. रामेश्वरम - पृष्ठ 597
[v] सामान्य भाषाविज्ञान और बंगाली भाषा-डॉ. रामेश्वरम - पृष्ठ 597
[vi] सामान्य भाषाविज्ञान और बंगाली भाषा-डॉ. रामेश्वरम - पृष्ठ 598
[vii] सामान्य भाषाविज्ञान और बंगाली भाषा-डॉ. रामेश्वरम - पृष्ठ 598
[viii] वांगालिर भाषा ओ संस्कृति-पश्चिम बंगाल उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद पृष्ठ-09
[ix] उच्चतर बंगाली व्याकरण - बामनदेव चक्रवर्ती पृष्ठ 269
[x] उच्चतर बंगाली व्याकरण - बामनदेव चक्रवर्ती पृष्ठ 270

ग्रंथ सूची

- मजुमदार, परेशचन्द्र. (बङ्गाब्द 1398). बांग्ला भाषा परिक्रमा. कोलकाता: देज पब्लिशिंग।
- राय, मोहितकुमार. (1988). भाषाविज्ञानेर गोड़ार कथा. कोलकाता: मॉडर्न बुक एजेंसी प्रा. लि.
- शर्मा, रामेश्वर. (बङ्गाब्द 1399). साधारण भाषाविज्ञान और बांग्ला भाषा. कोलकाता: पुस्तक विपणि।
- चक्रवर्ती, श्रीवामनदेव. (2013). उच्चतर बांग्ला व्याकरण. कोलकाता: अक्षय मालञ्च।
- सेन, सुकुमार एवं सेन, सुभद्र. (1990). बाङालीर भाषा. कोलकाता: पश्चिमबंग बांग्ला अकादमी।
- सेन, सुकुमार. (1938). भाषार इत्तिवृत्त. कोलकाता: ईस्टर्न पब्लिशर्स।
- चट्टोपाध्याय, सुनीतिकुमार. (1975). बाङला भाषा प्रसङ्ग. कोलकाता: जिज्ञासा।